VISION IAS

www.visionias.in

SUBJECT:	ESSAY	Test Code:	2 1 2 2
Name of Candidate	Pooja Meena		
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	1 5 4 3 5 0
Center	Online	Date	01 08 22

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हम दुनिया को जिस नजरिए से देखते हैं, वह उसके प्रति हमारे व्यवहार को आकार प्रदान करता है।

नेटफ्लिक्स पर आई डाक्यूमेंटरी 'सोशल डिलेमा' में फेसबुक, ट्विटर और व्हाट्सएप के कर्मी अपना अनुभव साझा कर बताते हैं कि डेटा माइनिंग की सहायता से किस प्रकार लोगों को वैचारिक आधार पर ध्रुवीकृत किया जाता है। डेटा के माध्यम से उन्हें उनकी पसंद के कार्यक्रम प्रदान किए जाते हैं, और उसी माध्यम से एक व्यक्ति व्यवहार करने लगता है।

उपर्युक्त वर्णन के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया कि आज के चौथे औद्योगिक क्रांति के युग में एक निष्पक्ष व तटस्थ नजरिया निर्मित होना कितना मुश्किल हो गया है। व्यक्ति का दुनिया को लेकर जैसा नज़रिया बनता है वह उसी प्रकार

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यवहार करता है।

इसी चर्चा को आगे बढ़ाते हुए हम देखेंगे कि मनोवृत्ति/अभिवृत्ति क्या होती है? यह कैसे बनती है? इसके कौन कौन से प्रकार होते हैं? और इसके आधार पर व्यवहार करने का तरीका कैसे बदलता है? इत्यादि घटकों पर वर्णन करेंगे।

सर्वप्रथम मनोवृत्ति/अभिवृत्ति से क्या अभिप्राय है? किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान विशेष के प्रति एक विशिष्ट प्रकार का दृष्टिकोण 'मनोवृत्ति' कहलाता है। इसके तीन पक्ष होते हैं → संज्ञानात्मक, संवेगात्मक एवं व्यवहारात्मक।

उदाहरणार्थ → साँप विषैला होता है (संज्ञाना०)
साँप से डरना (संवेगात्मक)
साँप को देखकर भागना (व्यव०)

उपर्युक्त उदाहरण की सहायता से समझा जा सकता है कि एक मनोवृत्ति किसी की भावनाओं व व्यवहार को किस

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रकार प्रभावित करती है।

व्यक्तित्व के निर्माण की शुरुआत समाजीकरण के प्रथम चरण से ही हो जाती है। परिवार, प्रथम पाठशाला मानी जाती है। परिवार की जाति-विशेष, महिलाओं इत्यादि को लेकर सोच ही जातिवाद एवं पितृसत्तात्मक के नाश, निर्माण मे भूमिका निभाती है।

परिवार के बाद स्कूल, कॉलेज एवं उच्चतर शिक्षण संस्थान एक व्यक्ति का व्यक्तित्व बनाते है। स्कूल मे वृक्षारोपण स्पोर्ट्स एवं छात्र राजनीति, प्रतिस्पर्धा एवं सहयोग संबंधी मूल्यो के विकास मे सहायक होते है।

स्कूल एवं कॉलेज के अतिरिक्त समाज रिश्तेदार एवं मित्र, इत्यादि एक विशिष्ट व्यक्तित्व के निर्माण मे योगदान देते है। इस प्रकार परिवार, स्कूल एवं समाज व्यक्तित्व के निर्माण मे योगदान देते है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

किसी स्थान, विशेष या व्यक्ति के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक, नकारात्मक एवं तटस्थ किसी भी प्रकार का हो सकता है। अभिवृत्ति जैसा होगा, व्यवहार भी उसी प्रकार का होगा।

सर्वप्रथम व्यक्तिगत स्तर पर देखते है। व्यक्तिगत स्तर पर स्वतन्त्रता व समानता जैसे संवैधानिक मूल्यों में विश्वास के परिणामस्वरूप भेदभाव मूलक व्यवहार का विरोध। उदाहरणार्थ डॉ. अंबेडकर, नेल्सन मंडेला।

दूसरी तरफ हिंसा, मारपीट एवं साम्प्रदायिक मूल्यों की तरफ झुकाव से आतंकवादी एवं असामाजिक कृत्यों को बढ़ावा। उदाहरण के लिए; ओसामा बिन लादेन, जर्मनी का हिटलर।

व्यक्तिगत की भाँति ही सामाजिक स्तर पर एक वर्ग विशेष यथा श्वेत - अश्वेत, दलित / जनजाति, महिलाएँ

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ट्रांसजेंडर इत्यादि वंचित वर्गों के प्रति नकारात्मक सामाजिक प्रवृत्ति का निर्माण होता है। अमेरिका में श्वेत-अश्वेत का मुद्दा, भारत में दलितों व धर्म-विशेष के नागरिकों के प्रति नकारात्मक सामाजिक व्यवस्था का निर्धारण होता है।

समाज में प्राचीन काल से ही महिलाओं को पुरुषों से कमतर, भोग की वस्तु की भांति प्रयोग किया जाता रहा है, जिसका परिणाम पितृसत्तात्मक प्रवृत्तियाँ यथा यौन हिंसा इत्यादि देखने को मिलती है।

यह समाज का एक नकारात्मक पक्ष है, दूसरा सकारात्मक पक्ष भी है जिसने 'लैंगिक समानता व न्याय' दोनों की बात की। इसी का परिणाम रहा है कि फेमिनिज्म जैसी अवधारणा उत्पन्न हुई और महिलाओं संबंधित कानूनी एवं संवैधानिक सुधार देखने को मिलते है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समाज में कुछ पक्ष ट्रांसजेंडर एवं LGBTQ को लेकर पृथक - पृथक मत रखते हैं। धारा-377 का विअपराधीकरण करना सकारात्मक नजरिए का व्यवहार्य रूप प्रदर्शित करता है।

इसी तरह पर्यावरणीय स्थिति को लेकर भिन्न - भिन्न मत देखने को मिलते हैं। एक नजरिया है कि प्रकृति मनुष्य के भोग के लिए है। जिसका परिणाम भोगवादी भौतिकवादी, उपभोक्तावादी के रूप में देखने को मिला।

भोगवादी संस्कृति के परिणाम-स्वरूप पर्यावरणीय निम्नीकरण, वैश्विक तापन, जलवायु परिवर्तन इत्यादि समस्याएँ देखने को मिल रही हैं। इसके चलते शरणार्थी एवं प्रवासी संबंधित मुश्किलें उत्पन्न हो रही

है।

पर्यावरण के प्रति एक दूसरा नजरिया पर्यावरण केन्द्रवाद का है जो प्रकृति व मानव के सामंजस्य एवं संधारणीय विकास के पक्षधर है। ग्रेटा थनबर्ग, तुलसी गौड़ा, चिपको आंदोलन इत्यादि इसी अ का परिणाम रहा है।

व्यक्तिगत, सामाजिक एवं पर्यावरणीय स्तर पर अवलोकन करने के बाद पुनः अभिवृत्ति / नजरिए को नैतिक व राजनीतिक में विभाजित कर भी समझना अपेक्षित है।

नैतिक अभिवृत्ति में नैतिक मूल्यों के प्रति एक व्यक्ति का नजरिया उसके व्यवहार का निर्धारण करता है। रामायण में हनुमान द्वारा 'भक्ति' का प्रदर्शन, महाभारत में एकलव्य द्वारा 'गुरु-शिष्य'

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

संबंधों का प्रदर्शन, नैतिक मूल्यों के प्रति अनुपालन दिखाता है।

दूसरी तरफ रावण द्वारा सीता का हरण, द्रौपदी का दुर्योधन द्वारा चीर-हरण अनैतिक मूल्यों के प्रति झुकाव को दिखाते हैं। नैतिक मूल्यों के प्रति झुकाव एक व्यक्ति को परम लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है।

नैतिक अभिवृत्ति के बाद राजनीतिक अभिवृत्ति की बात करते हैं। राजनीतिक मूल्यों के प्रति आधार से एक व्यक्ति का व्यवहार निर्धारित होता है। वामपंथी, दक्षिणपंथी एवं केन्द्रवादी इत्यादि प्रवृत्तियों के अनुरूप दुनिया को समझने का प्रयास किया जाता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

राजनीतिक अभिवृत्ति के बाद अब हम लोक-सेवकों के संदर्भ में समझने का प्रयास करेंगे। लोक सेवकों के लिए आवश्यक है कि वे राजनीतिक रूप से निष्पक्ष एवं नैतिक रूप से उत्कृष्ट व्यवहार करें।

वंचित वर्गों, महिलाओं, दिव्यांगों एवं ट्रांसजेंडर्स को लेकर करुणामयी नजरिया रखना चाहिए। करुणामयी नजरिए से नीति-निर्माण एवं कार्यान्वयन में हितों को ध्यान में रखा जाएगा। प्रशासन में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद एवं लाल-फीताशाही जैसी समस्याएँ नैतिक व राजनीतिक प्रवृत्ति से सुलझाई जा सकती है।

उपर्युक्त भाग में अभिवृत्ति के प्रकारों की सहायता से हमने देखा कि भिन्न-भिन्न स्तरों पर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बाजारीकरण ने व्यवहारों को किस प्रकार प्रभावित किया है।

आगे के खंड में हम देखेंगे कि वर्तमान की स्थिति एवं व्याप्त समस्याएँ किस प्रकार बाजारीकरण से जुड़ी हुई है।

निबंध के शुरुआत में 'सोशल डिलेमा' का संदर्भ देते हुए बताया गया था कि वर्तमान का युग 'वैचारिक ध्रुवीकरण का युग' होता जा रहा है।

चौथी औद्योगिक क्रांति एवं बढ़ती भौतिकतावादी संस्कृति ने व्यक्तिवाद एवं भोगवादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा दिया है। युवाल नोआ हरारी ने अपनी पुस्तक '21 वी शताब्दी के 21 सबक' में कहा है कि

आने वाले समय मनुष्य अर्थहीन हो जाएगा।

लोगों का दुनिया को देखने का नजरिया दिन ब दिन बदलने लगा है, जिसका भुगतान आगामी पीढ़ी को भुगतना पड़ेगा। प्लास्टिक का प्रयोग, आतंकवादी गतिविधियाँ, जैव-विविधता का नाश ~~आदि~~ इत्यादि भोगवादी प्रवृत्ति का परिणाम है।

इसी प्रवृत्तियों के समाधान स्वरूप पेरिस समझौता, संधारणीय विकास इत्यादि लाए गए।

मुख्य समस्या पर्यावरणीय/सामाजिक नहीं, लोगों का नजरिया है, जिसने उनकी जीवन संस्कृति को पूर्णतः बदल दिया है। अतः इस समस्या का मूल समाधान लोगों का इस दुनिया को देखने/नजरिए को सही दिशा में परिवर्तित कर ही

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्राप्त हो सकेगा।

टेलीविजन पर 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की टैगलाइन कि, ('प्रॉब्लम्स तो है सबके साथ बस जजारिए-नजारिए की बात') ने समावेशी व संधारणीय दृष्टिकोण अपनाने की बात कही।

समावेशी व संधारणीय दृष्टिकोण हेतु समाज, राष्ट्र व नागरिकों को मिलकर प्रयास करने की जरूरत है। समाजीकरण की प्रक्रिया, गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा, संवैधानिक मूल्यों के अनुपालन द्वारा यह संभव होगा।

हाल ही में किए गए सुधार यथा नई शिक्षा नीति 2020, पंचामृत (जलवायु परिवर्तन), इत्यादि द्वारा पर्यावरण व समाज को लेकर लोगों को जागरूक करने से

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सहायक रहेगी।

एक पानी से आधे भरे गिलास को कोई आधा भरा कहता है तो कोई पूरा भरा (हवा के साथ) तो कोई आधा खाली। इसी प्रकार के सकारात्मक नकारात्मक एवं आशावादी नजरिए के चश्मे से लोग दुनिया को देखते हैं तथा व्यवहार करते हैं।

आवश्यकता है कि लोगों को मानसिक व शारीरिक रूप से सुदृढ़ बनाए ताकि विश्व को लेकर उनका तटस्थ व स्पष्ट नजरिया निर्मित किया जा सके। कबीर जी के दोहे से निबंध को निष्कर्षित कर सकते हैं :

"बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलया कोय, जो मन देखा आपने, तो मुझसे बुरा न कोय"।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

अत: हम जैसा सोचते है, करते है, वैसा ही दुनिया हमें दिखाई देती है, अत इसलिए स्व के स्तर पर सुधार करे और आगे बढ़े।

Social Dilemma
← ध्रुवीकरण

VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

(1) Main Body 3 अभिवृत्ति ← सकारात्मक / नकारात्मक

सामाजिक, पर्या, नैतिक, राज, तटस्थ

CAB ← सोच का उदाहरण (व्यक्तिगत)

Tribals ← artis, Oxfam, व्यवसाय / धर्म → टीवी सीरियल

- P → सामाजिक स्तर → वंचित वर्ग / अमीर / महिला / ट्रांसजेंडर ↗ फेमिनिज्म
- N → राजनीतिक स्तर → नेता - प्रतिनिधि (भ्रष्टाचार), लोकतंत्र, आपातकाल
- → पर्यावरणीय < पर्यावरण केन्द्रवाद / मानववाद / भोगवादी
- → प्रशासनिक ← लोकसेवक का दृष्टिकोण → जनता के प्रति
- → नैतिक ← आतंकवादी / सुधारक

(2) अभिवृत्ति / नजरियाँ बनता कैसे

- → समाजीकरण ← परिवार, स्कूल, समाज
- → राष्ट्र
- → विश्व
- → मीडिया / तकनीकी युग (ध्रुवीकरण) (Social Dilemma)

वर्तमान समस्याएँ → समाज, प्रशासन, अन्तर्रा.

सोशल मीडिया

समाधान → नजरिए को बदल कर,
व्यक्तिगत → प्रशिक्षण, 'विपश्यना'
- सामाजिक स्तर पर → समाजीकरण
- राजनीतिक → द्वितीय ARC,
- पर्यावरणीय → ग्रेटा थनबर्ग, पेरिस समझौता
- नैतिक → Social Media

Tarak Mehta का उल्टा चश्मा, नजरिए के

- तारक मेहता का उल्टा चश्मा
- Social Dilemma
- (गिलास आधा भरा आधा खाली)
- रामायण
- महाभारत
- क० पूर्वाग्रह

- → अभिवृत्ति क्या
- → कैसे बनती है
- → प्रकार ← सकारात्मक, नकारात्मक, तट.
- सकारात्मक प्रवृत्ति ← व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीति, पर्या., प्रशा.
- नकारात्मक प्रवृत्ति ← व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीति, पर्या., प्रशा.
- तटस्थ प्रवृत्ति
- वर्तमान की समस्याएं आदि
- समाधान
- निष्कर्ष

°° Plato का न्याय सिद्धांत

☒ • अक्ल बड़ी कि भैंस

साबू-चाचा चौधरी → Conclusion

VISION IAS™

• सुकरात

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

• (शारीरिक बल vs मानसिक बल)

- कुम्भकरण

विरोध-प्रदर्शन) कलाम जी द्वारा न्यायिक विधायिका में जनता संवाद|

शक्ति के तर्क → क्या

तर्क की शक्ति – क्या

दोनों में क्या भेद?

• सैन्य

• विदेशी संबंध

↳ अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे

• चूहे व शेर की कहानी

अकबर-बीरबल

→ शक्ति के तर्क की अपेक्षा तर्क की शक्ति को प्राथमिकता क्यों दी गई → व्यक्तिगत, समाज, राजनीति, वैश्विक (ऐतिहासिक)

→ शक्ति के तर्क से दुष्प्रभाव (तर्क की शक्ति न होने)

↳ व्यक्तिगत, समाज, वैश्विक, प्रशासनिक

→ दोनों का तर्क की शक्ति का विकास कैसे?

- व्यक्तिगत
- सामाजिक

→ दोनों का समन्वय

- भीम
- चाचा चौधरी
- अब्दुल कलाम

Plato का न्याय सिद्धांत

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

शक्ति के तर्क की अपेक्षा तर्क की शक्ति में विश्वास करना चाहिए

विद्यालय के एन.सी.सी के कैंप में कोच के द्वारा सभी छात्र-छात्राओं को खिड़की पर खड़ा कर 'कूदने' का आदेश दिया गया, लगभग सभी छात्रों ने कूदने से मना कर दिया या अधिकतर खिड़की के बाहर कूदने लगे (जिन्हें रोका गया)। अंत में एक विद्यार्थी द्वारा अपनी जगह पर कूदा गया कृत्य ने, सभी को अचंभित कर दिया। कोच ने छ विद्यार्थी को शाबाशी देते हुए कहा कि आवश्यक नहीं कि हर परिस्थिति में शक्ति के तर्क की जरूरत हो, तर्क की शक्ति से भी महत्वपूर्ण कार्य किए जा सकते हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उपर्युक्त दृष्टांत के माध्यम से शारीरिक शक्ति से ज्यादा मानसिक शक्ति की प्रबलता व महत्ता को बताने का प्रयास किया गया है।

निबंध के आगे के खंडो में शक्ति का तर्क एवं तर्क की शक्ति से क्या तात्पर्य है। दोनों में क्या भेद है? शक्ति के तर्क की अपेक्षा तर्क की शक्ति को प्राथमि-कता क्यों दी जाती है? यदि तर्क न रहे और सिर्फ शक्ति रहे तो क्या परिणाम होगे? इत्यादि प्रश्नों पर विवेचन किया जाएगा।

शक्ति के तर्क से अभिप्राय है शक्ति की सहायता से बल-प्रदर्शन करना। शारीरिक/आर्थिक इत्यादि बल का प्रयोग कर कार्य करने की शक्ति। जैसे → किसी व्यक्ति

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

से कोई कार्य करवाना या किसी को कोई कार्य करने से रोकने में बल का प्रयोग करना। (दंगों में भीड़ को पुलिस द्वारा डंडो से तितर-बितर करना)

तर्क की शक्ति का अभिप्राय है बौद्धिक शक्ति की सहायता से समस्या समाधान करना, जीवन-यापन करना। शारीरिक बल की अपेक्षा मानसिक बल को प्राथमिकता प्रदान की जाती है। उदाहरणार्थ: न्यूट्रिनो वेधशाला के स्थापना के दौरान डा. कलाम द्वारा जनता से अपनी अनुनयन क्षमता से हटने का अनुरोध करना।

बचपन से ही 'अक्ल बड़ी कि भैंस' मुहावरे के माध्यम से शारीरिक व मानसिक शक्ति के मध्य का भेद एवं मानसिक शक्ति की प्राथमिकता के बारे में सिखाया जाता रहा है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

दोनों शब्दो का अभिप्राय समझने के बाद अब हम देखेंगे कि क्यों शक्ति के तर्क की अपेक्षा तर्क की शक्ति को प्राथमिकता दी जाती है या दी जाने की अपेक्षा की जाती है।

शक्ति के तर्क एवं तर्क की शक्ति के मध्य संबंध को समझाते हुए व्यक्तिगत, सामाजिक, प्रत्येक स्तर पर वर्णित किया जाएगा।

सर्वप्रथम व्यक्तिगत स्तर पर देखें तो हम दैनिक अनुभव से इसे सिद्ध कर सकते हैं। बच्चे को खाना खिलाने के लिए एक माँ उसे बाहर घुमाने ले जाने का वादा कर उसे पौष्टिक खाना खिलाती है, बजाय डाँट के। दूसरा किसी से झगड़ा करने के स्थान पर आपसी बातचीत के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

माध्यम से विवादों का समाधान।

सामाजिक स्तर पर भी समझौता वादी विचारकों द्वारा 'सामाजिक संविदा' का सिद्धांत दिया गया। वर्तमान में सामाजिक समस्याएँ यथा कुपोषण, मातृ-मृत्यु दर में कमी, कम लिंगानुपात जातिवाद इत्यादि शक्ति द्वारा नहीं तर्क के माध्यम से ही सुधारे जा सकते है। इसलिए सरकार द्वारा प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, पोषण अभियान इत्यादि लाए गए।

यदि उपर्युक्त उपायों के स्थान पर शक्ति का प्रयोग किया जाए तो समाज में जातिवाद, साम्प्रदायिकता पितृसत्तात्मकता इत्यादि असामाजिक गतिविधियों में कमी के बजाय वृद्धि देखने को मिलेगी, क्योंकि जैसा कि पूर्व निबंध में देखा गया कि मूल समस्या बाहरी नहीं आंतरिक है जिसे आंतरिक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ न लिखें)

तर्क शक्ति द्वारा ही सुलझाया जा सकता है।

राजनीतिक स्तर पर भी सत्तापक्ष व विपक्ष के मध्य विवाद इत्यादि वैचारिक विवाद देखने को मिलते हैं, यदि शक्ति के माध्यम से इनका समाधान किया जाता तो सत्तातंत्र के विभिन्न रूप यथा अराजकतावाद, लोकतंत्र, अधिनायकतंत्र एवं साम्यवाद नहीं उत्पन्न होते।

इतिहास गवाह है जब-जब शक्ति का प्रयोग कर विवाद सुलझाने का प्रयास किया गया, तब-तब भयानक घटनाएँ घटित हुई। फिर चाहे वह प्रथम / द्वितीय विश्व युद्ध हो या नागासाकी / हिरोशिमा बम कांड। शक्ति प्रयोग ने मानवता को सदैव शर्मसार ही किया है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वर्तमान में वैश्विक भू राजनीति पर दृष्टि डाले तो हमें स्त्रीलंका का मुद्दा, रूस-यूक्रेन, अमेरिका - चीन शीत युद्ध इत्यादि मुद्दे देखने को मिल रहे। ये सभी सत्ता प्राप्ति एवं शक्ति के प्रदर्शन का ही परिणाम है।

उपर्युक्त सभी स्तरों पर वर्णन करने के बाद हमने जाना कि शक्ति के प्रयोग की पर इतिहास से लेकर वर्तमान तक विदीय मानव, समाज व पर्यावरण को हमेशा भोगना पड़ता है।

शक्ति के तर्क की अपेक्षा तर्क की शक्ति को महत्व इसलिए होना चाहिए क्योंकि यह मानव के मूलभूत चरित्र कि मानव एक बौद्धिक प्राणी है के अनुकूल है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

तर्क की शक्ति द्वारा बड़ी से बड़ी आपदा का समाधान किया जा सकता है। कोविड़-19 महामारी के दौरान तार्किक बुद्धि का प्रयोग कर लोगों ने एक-दूसरे को मानसिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार की सहायता प्रदान की।

विदेशी व्यापार एवं अन्तर्राष्ट्रीय संबंधो में भी शक्ति के बजाय तर्क का प्रयोग करते हैं। जैसे अमेरिका - चीन - भारत तीनो प्रतिद्वंद्वी देश है किन्तु आपसी सामंजस्य से ये अपने भू-राजनीतिक व आर्थिक संबंधो को संतुलित रखते है।

लोक-प्रशासन के स्तर पर भी तर्कशक्ति का महत्व देखा जा सकता है। नागरिकों, समाज एवं प्रशासन तीनों के प्रति जवाबदेहता

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को ध्यान में रखते हुए कर्तव्यों का निष्पादन किया जाना होता है।

एक लोक सेवक को भूमि, राजस्व जैसे मामलों में ~~विवेक~~ विवेकाधिकार प्रदान किए जाते है। नीतियों के निर्माण एवं कार्यान्वयन संबंधी शक्तियाँ प्रदत्त की जाती है। इन सभी शक्तियों को तार्किक रूप से सामाजिक - आर्थिक विकास की स्थापना में तर्कशक्ति सहायता करती है।

इसके अतिरिक्त तार्किकता, अंध-विश्वासों एवं अवैज्ञानिक अभिवृत्ति को दूर करने में सहायता प्रदान करती है। इससे सामाजिक सौहार्द, धार्मिक सद्भावना को स्थापित करने में लोकसेवक को आसानी होती है। (उदाहरणार्थ → सबरीमाला मंदिर मुद्दा) ~~का~~

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

शक्ति के तर्क का दुरुपयोग एवं तर्क की शक्ति के सकारात्मक प्रभावों को वर्णित कर निबंध के अगले अध्याय की तर्क की शक्ति को कैसे विकसित किया जा सकता है?

तर्क की शक्ति के विकास हेतु व्यक्तिगत स्तर पर गुणवत्ता युक्त शिक्षा, तार्किक सामाजीकरण की प्रक्रिया एवं समावेशी समाज आवश्यक है। (डा. कलाम द्वारा माँ, पिता व शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा गया)

सामाजिक स्तर पर सामाजिक ढांचा यथा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार इत्यादि की उपलब्धता से सुदृढ़ किया जाना चाहिए। समाज सुदृढ़ होगा तो नागरिक सुदृढ़ होंगे तदनुरूप सूचना का अधिकार, नागरिक घोषणा पत्र

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इत्यादि द्वारा शासन को उत्तरदायी उत्तरदायित्व निर्मित होगा।

लोक-प्रशासकों से प्रशिक्षण पद्धति केन्द्रीय सिविल आचरण संहिता में संशोधन इत्यादि द्वारा तार्किकता को परिष्कृत किया जा सकता है।

उपर्युक्त उपायों के माध्यम से तार्किकता को स्थापित किया जा सकता है। प्रश्न उठता है कि क्या सिर्फ तर्क की शक्ति ही स्वयं में पर्याप्त है? या शक्ति व तर्क दोनों के समन्वय से व्यक्ति या राष्ट्र प्रगति कर सकता है। आगे के कुछ खंडों में इस पक्ष को समझने का प्रयास किया जाएगा।

बचपन से चाचा चौधरी का एक सीरियल व उसका एक और किरदार 'साबू' की सहायता से इसे आसानी से समझा जा

सकता है। जहाँ तर्क की आवश्यकता होती थी वहाँ चाचा चौधरी तथा जहां बल का प्रयोग किया जाना होता वहां साबू की जरूरत होती थी।

उपर्युक्त उदाहरण के आधार पर समझा जा सकता है कि मानसिक व शारीरिक बल दोनों को समान महत्व दिए जाने की आवश्यकता है। (जैवलिन थ्रो खिलाडी नीरज चोपडा)

इसी प्रकार एक राष्ट्र को भी अपनी 'हार्ड पावर' एवं 'सॉफ्ट पावर' को समन्वित करने की जरूरत है। द्वितीय परमाणु परीक्षण के दौरान भारत ने शक्ति व तर्क का अद्भुत

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समन्वय का प्रदर्शन किया।

निबंध को निष्कर्ष तक पहुँचाने में प्लेटो के न्याय सिद्धांत का प्रयोग किया जा सकता है। इस सिद्धांत में प्लेटो ने विवेक, साहस, संयम के समन्वय की बात कही जिससे व्यक्तिगत स्तर पर आत्म-संतुष्टि एवं राज्य के स्तर पर न्याय की स्थापना संभव होगी।

अतः शास्त्र के तर्क एवं तर्क की शास्त्र के समन्वय के माध्यम से व्यक्तिगत व राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने में सहायता होगी।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write
anything this
margin
[illegible]
[illegible]